-: कल्चरल विंग वालों प्रति बापदादा की विशेष प्रेरणायें :-

आप लोगों ने क्या प्लैन बनाया, क्या मीटिंग की ? आप लोगों ने कल्चरल का बनाया या कल्चर का बनाया ? (मीटिंग करना बाकी है) तो लड्डू भी बाकी है। जो भी वर्ग पहले वारिस या माइक लायेगा उनको ८-८ लड्डू खिलायेंगे । भण्डारा तो भरपूर है। (आप कहेंगे तो १६ भी खिला देंगे)बड़ी दादी है तो बड़ी दिल है। अच्छा है, यह वर्ग के प्रोग्राम भी अच्छे सेवा में समीप ला रहे है और सभी वर्ग अपनी-अपनी सेवा में अच्छे आगे बढ़ रहे हैं । और यह भी जो हर वर्ग वालों को चांस दिया है, कुछ कर रहे है-यह तो पता पड़ता है। कल्चरल ग्रुप – नाचना गाना तो सभी को आता है, बाप के गुणो का गीत गाना भी आता है और खुशी में नाचना भी आता है। अच्छा है। कल्चर द्वारा भारत का कैरेक्टर प्रसिद्ध करो। हो कल्चर लेकिन कैरेक्टर सिद्ध हो जाए कि श्रेष्ठ कैरेक्टर क्या है। अच्छा है, जबसे वर्ग बने हैं, अलग-अलग सेवा तो कर रहे हैं। कमाल करके दिखाना । सब कमाल करने वाले है ना ? कमाल करना है ना ! हर वर्ग को अभी नया-नया प्लैन बनाना चाहिए। यह वर्ग बनके कितना साल हो गये हैं ? (२० साल) बापदादा ने सभी वर्ग वालों को कहा था, याद है कि अपने-अपने वर्ग का विशेष सेवा में माइक बनें या वारिस बने, ऐसा संगठन तैयार करो। तो आपके कल्चरल में कौन तैयार हुआ है ? लाया है ? बाप का सन्देश देने के लिए आपकी तरफ (बाम्बे के प्रसिद्ध एक्टर परिक्षित सहानी परिवार बापदादा के सामने खड़ा है) सब अंगुली कर रहे हैं। अच्छा है, प्लैन बनायेगा। हिम्मत आपकी, मदद बाप की है ही है।

कल्चरल विंग :-

१) कल्चरल विंग ने क्या नया प्लैन बनाया ? कोई नया प्लैन बनाया ? (अभियान निकालने का और कान्फ्रेंस करने का प्लैन बनाया है) यह तो ठीक है, नया क्या बनाया ? यह तो अच्छा है भले करो लेकिन कुछ नवीनता करो। (प्रदर्शनी बनाई है, इससे बापदादा की प्रत्यक्षता करेंगे) बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक विंग कोई नया प्लैन बनाये, कितने समय से कान्फ्रेन्स की है, कितना टाइम हुआ है कान्फ्रेन्स करते, बहुत साल हो गये और प्रदर्शनी, अभियान यह तो करते रहते हो, अभी कोई नया प्लैन बनाओ। (कल्चरल कार्निवल करने का विचार है) बनाओ प्लैन। अच्छा । सभी वर्ग के लिए बापदादा कर रहे हैं कि कोई नया प्लैन बनाओ। यह तो सभी को पता पड़ गया है कि ब्रह्माकुमारियां कान्फ्रेन्स करती है, अभियान भी निकालती हैं, यह सबको पता पड़ गया है । अभी कोई नया प्लैन ऐसा बनाओ जो सब समझें कि यह देखना जरुरी है क्योंकि आजकल नवीनता को पसन्द करते हैं। तो सोचो, टच हो जायेगा कोई ब्रडी बात नही है और देखेंगे कौन सा वर्ग नवीनता दिखाता है। नम्बरवन एक तो बनेगा ना। तो करो। अमृतवेले योग के बाद, योग के टाइम नहीं करना लेकिन योग के बाद दिमाग में ताकत होती है वह भी करो लेकिन कुछ नया करके दिखाना। सोचा। बहुत अच्छा।

२) कल्चरल वाले जब कल्चरल दिखाते हो तो उसमें और क्या सिद्ध करते हो ? जो भी कल्चरल करते हो उसमें आपके चलन चेहरे और कर्म से क्या कैरेक्टर दिखाई देता है, यह श्रेष्ठ कैरेक्टर वाले हैं, यह दिखाई देता है ? हाँ करो या ना ? हाँ तो हाथ हिलाओ । अच्छा दोनों लक्ष्य रखते हो।क्योंकि कल्चरल प्रोग्राम तो सभी करते हैं लेकिन आप जो कल्चरल दिखाते हो या प्रोग्राम करते हो उसमें सिर्फ कल्चरल नहीं हो लेकिन नैतिक मूल्य भी समाये हुए हो कैरेक्टर हो । उससे क्या होगा ? देखने वालों को सहज ही आकर्षण होगी कि हम भी कैरेक्टर धारण करें।तो इस विधि से, क्योंकि कई ज्ञान सुनने नहीं चाहते सीधा ज्ञान नहीं सुनेगें लेकिन आपके कल्चरल से वह कैरेक्टर सीख जायें। ऐसा कर भी रहे हो और भी लक्ष्य रखो कि कम से कम दखने वाले जो हैं उनको नैतिक वैल्यु का इशारा तो मिले, आकर्षण तो हो, हमको करना है। बाकी अच्छा कर रहे हैं। जो भी वर्ग कर रहे हैं बापदादा हर वर्ग के पुरुषार्थ और रिजल्टको देख खुश हैं। और इस वर्गीकरण की सेवा के बाद कई भाई बहिनों को चांस मिला हैं, सेवा के क्षेत्र में आगे आने में बिजी रहते हैं। इसलिए बापदादा को वर्गोकी सेवा अच्छी लगती है। सभी कर रहे है। कभी कोई वर्ग आता हे, कभी कोई वर्ग आता है तो सभी ठीक है ? बहुत ठीक या ठीक हैं ? बहुत ठीक ? तीव्र पुरुषार्थी या पुरुषार्थी क्या हैं ? अच्छा चल रहे हैं या उड़ रहे है ? क्या कहेंगे ? अभी उड़ना है। चलने का टाइम पूरा हो गया । जैसे बैलगाड़ी का सीजन पूरा हो गया, कारें आ गई हैं। पहले तो बैलगाड़ियों में ही जाते थे। तो अभी चलने का समय पूरा हुआ, अभी उड़ना है। अच्छा।

३) कल्चर वालों ने क्या कल्चरल डिपार्टमेंटस में, कोई ऐसी डिपार्टमेंट तैयार की है जो प्रत्यक्ष रूप में वर्णन करें कि हमनें आध्यात्मिक कल्चर द्वारा यह-यह अनुभव किया है। हमारी सारी डिमार्टमेंट परिवर्तन हुई है। ऐसे सभी वर्ग को बापदादा यही कहते हैं ऐसे सात-आठ, दस-बारह एक्जैम्पुल तैयार करो जो फिर गवर्मेन्ट को, वर्गीकरण क्या करता है उसका एक्जैम्पुल सुनायें। तो गवर्मेन्ट का भी सहयोग मिल सकता है। बापदादा ने सुना था एक डिपार्टमेंट ने कहा है कि पैसा हमारे पास है, काम आपके पास है। तो काम का प्रत्यक्ष सबूत देखने से उन्हों का भी सफल कराओ ना, नहीं तो ऐसे ही बिचारा खजाना चला जायेगा। उन्हों यूज करने नही आता, आप सफल करा सकते हो, प्रभाव से । तो सभी वर्ग वाले मिलके ऐसा कोई प्लैन बनाओ जो प्रैक्टिकल में हर वर्ग का सबूत दिखाई दे। (ऊषा बहन ने **चन्द्रपुर, भोपाल** के कल्चरल प्रोग्राम का समाचार सुनाया) प्रोग्राम अच्छा किया उसकी मुबारक है, अभी अच्छा बनाके दिखाओ।

४) कल्चरल और कल्चर दोनों मिलते हैं। तो कल्चरल द्वारा कल्चर बन जाए, यही सेवा कर रहे हैं। बापदादा हर एक वर्ग का उमंग-उत्साहे देखते भी है, हर एक अपने अपने विधि से सेवा को बढ़ा तो रहे हैं लेकिन अभी निमित्त कल्चरल दिखाते हो लेकिन बनाना क्या है ? कल्चर। मनुष्य आत्माओं का कल्चर बदल जाये। तो अभी तो आप कल्चरल दिखाते हो लेकिन कल्चर बदलने से वह भी अपने कार्य में रहते खुशी की डांस शुरू करें। घर-घर में डांस हो। लक्ष्य तो अच्छा है और लक्ष्य को लेके सेवा को बढ़ाते भी चलते हो लेकिन बाबा चाहता हैं, अभी देखना चाहता है कौन सा वर्ग कंगन तैयार करके लाता है। इसमें चाहे

नम्बरवन होवे, चाहे नम्बरवन मे सहयोगी हो। बापदादा अभी कुछ नवीनता चाहता है क्योंकि सभी वर्गों ने बीज तो अच्छा डाला है लेकिन अब फल दिखाई दे। कम से कम ९ लाख से और बढ़ना चाहिए ना । तो अच्छा है, सभी बच्चे भिन्न-भिन्न वर्ग के कारण जिम्मेवार तो बने हैं। अटेन्शन भी गया है, अभी वृद्धि थोड़ा जल्दी करो क्योंकि समय की पुकार बहुत है, दु :ख अशान्ति बहुत बढ़ रही है, भय बढ़ रहा है। और आप खुशी की डांस करो, भयभीत से बचाओ। अच्छा है। हर एक सेवा के क्षेत्र में बिजी भी रहता है, यह भी अच्छा है। इसीलिए बढ़ते चलो, अपने साथियों को जो कल्प कल्प वाल है उन्हों को ढूंढके निकालो। अच्छा । बहुत अच्छा है औरअच्छा रहेगा और बढता रहेगा।

५) कल्चरल वाले अपने कल्चरल वालों की सेवा तो अच्छी कर रहे है। बापदादा ने देखा कि कई कल्चरल वाली आत्माये यज्ञ के सहयोग में आई हैं और अपना सेवा का पार्ट भी बजा रही हैं। दूसरें लोगों को भी अपेन अनुभवों से लाते रहते हैं। सेवा में आगे बढ़ रहे है। तो बहुत अच्छा है। जो बाप ने स्थापना के समय कहा था कि आपके पास कल्चरल वाले भी अनुभवो बन औरों को अनुभव सुनायेंगे। तो वह कर भी रहे हो और आगे भी करते रहना। जो आवाज फैल जाए कि ब्रह्माकुमार-कुमारियों सेवा कर कल्चरल वालों को कैरेक्टर बिल्डिंग बनाने का भी अनुभवी बनाते हैं। अच्छे-अच्छे आ रहे हैं जो आगे बढ़ रहे हैं और दूसरों को भी अनुभव सुनाके आगे बढ़ा रहे है, इसलिए बढ़ते रहो बढ़ाते रहो।

www.artandculturewing.com